अर्थशास्त्र कक्षा 10वीं

अध्याय - 2

''भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक''

याद रखने योग्य बातें :-

1. आर्थिक गतिविधि - ऐसे क्रियाकलाप जिनको करके जीवनयापन के लिए आय की प्राप्ति की जाती है।
2. प्राथमिक क्षेत्रक - वह क्षेत्र है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। इसे कृषि व सहायक क्षेत्रक भी कहा जाता है।
3. द्वितीयक क्षेत्रक - वह क्षेत्र है जिसमें उद्यम, प्राथमिक उद्योगों से प्राप्त वस्तुओं को दूसरे अंतिम प्रकार में परिवर्तित करते है। इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है।
4. तृतीयक क्षेत्रक या सेवा क्षेत्रक, प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक के लिए उत्पादन सहायक गतिविधियों में सहायता करता है। इसे सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है।
5. सेवा क्षेत्रक में उत्पादन सहायक गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य सेवाएं भी हो सकती है। जैसे - डॉक्टर, वकील आदि की सेवा, कॉल सेंटर, सॉफ्टवेयर विकसित करना आदि।
6. सार्वजनिक क्षेत्र - जिसमें अधिकांश परिसम्पतियों पर सरकार का स्वामित्व होता है और सरकार ही सभी सेवाएँ उपलब्ध करवाती है।
7. निजी क्षेत्र - वह क्षेत्र जिसमें परिसम्पत्तियों का स्वामित्व और सेवाओं का वितरण एक व्यक्ति या कम्पनी के हाथों में होती है।

8. सकल घरेलु उत्पाद - किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का मूल्य उस वर्ष में क्षेत्रक के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है।

9. भारत में पिछले चालीस वर्षों में सबसे अधिक वृद्धि तृतीयक क्षेत्रक में हुई है।

10. इस तीव्र वृद्धि के कई कारण हैं जैसे - सेवाओं का समुचित प्रबंधन, परिवहन, भंडारण की अच्छी सुविधाएँ, व्यापार का अधिक विकास, शिक्षा की उपलब्धता आदि।

11. कृषि क्षेत्र में अल्प बेरोजगारी की समस्या अधिक है अर्थात् यदि हम कुछ लोगों को कृषि क्षेत्र से हटा भी देते है तो उत्पादन में विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

12. इसे प्रच्छन्न या छिपी हुई बेरोज़गारी भी कहा जाता है।

13. शिक्षित बेरोज़गार जब शिक्षित, प्रशिक्षित व्यक्तियों को उनकी योग्यता के अनुसार काम नहीं मिलता।

14. कुशल श्रमिक - जिसने किसी कार्य के लिए उचित प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अकुशल श्रमिक - जिन्होंने कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है।

15. संगठित क्षेत्रक - वे उद्यम या कार्य आते है, जहाँ रोजगार की अवधि निश्चित होती है। ये सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं तथा निर्धारित नियमों व विनियमों का अनुपालन करते हैं।

16. असंगठित क्षेत्रक - छोटी-छोटी और बिखरी हुई ईकाइयाँ, जो अधिकाशंतः सरकारी नियंत्रण से बाहर रहती हैं, से निर्मित होता है। यहाँ प्रायः सरकारी नियमों का पालन नहीं किया जाता।

17. दोहरी गणना की समस्या - ये समस्या तब उत्पन्न होती है जब राष्ट्रीय आय की गणना के लिए सभी उत्पादों के उत्पादन मूल्य को जोड़ा जाता

है। क्योंकि इसमें कच्चे माल का मूल्य भी जुड़ जाता है। अतः समाधान के लिए केवल अंतिम उत्पाद के मूल्य की गणना की जानी चाहिए।

18. असंगठित क्षेत्रक - भूमिहीन किसान, कृषि श्रमिक, छोटे व सीमान्त किसान, काश्तकार, बँटाईदार, शिल्पी आदि। शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक श्रमिक, निमार्ण श्रमिक, व्यापार व परिवहन में कार्यरत, कबाड़ व बोझा ढोने वाले लोगों को संरक्षण की आवश्यकता होती है।

19. ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम 2005 - केन्द्रीय सरकार ने भारत के 200 जिलों में काम का अधिकार लागू करने का एक कानून बनाया है।

20. काम का अधिकार - सक्षम व जरूरतमंद बेरोज़गार ग्रामीण लोगों को प्रत्येक वर्ष 100 दिन के रोज़गार की गारन्टी सरकार के द्वारा। असफल रहने पर बेरोज़गारी भत्ता दिया जाएगा।

1 अंक वाले प्रश्न :-

1. सेवा क्षेत्रक में शामिल गतिविधियों के दो उदाहरण दीजिए।
2. अर्थव्यवस्था में प्रत्येक क्षेत्रक के अंतिम उत्पाद की ही गणना क्यों की जाती है ?
3. सार्वजनिक व निजी क्षेत्रक को किस आधार पर वर्गीकृत किया जाता है ?
4. रोज़गार सृजन में किस क्षेत्र का भारत में प्रथम स्थान है ?
5. संगठित क्षेत्र की दो विशेषताएँ बताइए ?
6. रोजगार गारन्टी अधिनियम किस वर्ष लागू किया गया ?
7. आर्थिक गतिविधियाँ जो तृतीयक क्षेत्र में नहीं आती का एक उदाहरण दीजिए।
8. सार्वजनिक क्षेत्रक में सरकार का मुख्य उद्देश्य क्या होता हैं ?

9. 'टिस्को' जैसी कम्पनी में कौन सा एक्ट लागू नहीं होगा ?

10. प्रच्छन्न बेरोजगारी को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है ?

11. भारत में सेवा क्षेत्रक की क्या विशेषता है ?

12. 'सवेतन छुट्टी' का प्रावधान किस क्षेत्रक में पाया जाता है ?

3/5 अंक वाले प्रश्न :-

1. सार्वजनिक व निजी क्षेत्रक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. असंगठित क्षेत्रक में मज़दूरों के सामने आने वाली कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

3. संगठित व असंगठित क्षेत्रकों में रोज़गार की परिस्थतियों में क्या अन्तर पाया जाता है ?

4. राष्ट्रीय रोज़गार गारन्टी अधिनियम के तीन प्रावधान बताइए।

5. ''यद्यपि आर्थिक गतिविधियों को प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रकों में विभाजित किया गया है लेकिन वे परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

6. शहरी क्षेत्रों में रोजगार पैदा करने की कोई तीन विधियाँ सुझाइए।

7. तेजी से बढ़ती जनसंख्या किस प्रकार बेरोज़गारी को प्रभावित करती है ?

8. ''आप एक संगठित क्षेत्र के कर्मचारी हैं।'' असंगठित क्षेत्र के किसी कर्मचारी की अपेक्षा आप को कौन से लाभ प्राप्त होगें ?

9. व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार सार्वजनिक क्षेत्रक राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है'' ?

10. छिपी हुई बेरोज़गारी क्या है ? ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में इसका एक-एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर माला (1 अंक वाले प्रश्न) :-

1. परिवहन , संचार व बैंकिग।
2. दोहरी गणना की समस्या से बचने के लिए।
3. उद्यमों के स्वामित्व के आधार पर।
4. प्राथमिक क्षेत्रक का।
6. वर्ष 2005 में।
7. मधुमक्खी पालन आदि
8. सामाजिक कल्याण व सुरक्षा प्रदान करना।
9. राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम।
10. अल्प बेरोज़गारी या छिपी हुई बेरोज़गारी।
11. सकल घरेलु उत्पाद में सर्वाधिक हिस्सेदारी।
12. संगठित क्षेत्रक में।

उत्तर माला (3/5 अंक वाले प्रश्न)

1. सार्वजनिक क्षेत्रक :-
    1) परिसम्पत्तियों पर सरकार का नियंत्रण
    2) सभी सेवाएँ सरकार उपलब्ध करवाती है।
    3) इसका उद्देश्य अधिकतम सामाजिक कल्याण होता है ?
    4) रोजगार सुरक्षा दी जाती है।
    5) सवैतनिक छुट्टी व अन्य सेवाएँ दी जाती हैं।

निजी क्षेत्रक :-

1) परिसम्पत्तियों पर निजी स्वामित्व।

2) सारी चीजें एक व्यक्ति या कम्पनी उपलब्ध करवाती है।

3) अधिकतम लाभ कमाना इसका उद्देश्य होता है।

4) रोज़गार व श्रमिक असुरक्षित होते है।

5) सवैतनिक छुट्टी व अन्य सेवाएँ सामान्यतः नहीं दी जाती।

2. 1) यह क्षेत्रक सरकारी नियमों व विनियमों को नहीं मानता।

2) न्यूनतम वेतन मिलता है।

3) रोजगार की अवधि व कार्य समय सीमा निश्चित नहीं होती।

4) किसी प्रकार की छुट्टी या लाभ का प्रावधान नहीं होता।

5) निश्चित कार्य क्षेत्र व अच्छी सेवा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होता।

3.

संगठित क्षेत्रक :-	असंगठित क्षेत्रक
1) अधिक वेतन प्राप्ति।	1) कम वेतन प्राप्ति
2) नौकरी सुरक्षित	2) नौकरी सुरक्षित नहीं।
3) कार्य की स्थितियाँ अच्छी	3) निम्न स्तरीय कार्य परिस्थितियाँ
4) कर्मचारी योजनाओं का लाभ	4) कर्मचारी योजनाओं का लाभ नहीं
5) कार्य अवधि निश्चित (काम के घंटे)	5) कोई निश्चित कार्य अवधि नहीं।

4. राष्ट्रीय रोजगार

1) राष्ट्रीय गारन्टी योजना के अर्न्तगत 100 दिनों के रोज़गार की गारन्टी।

2) रोजगार न मिलने या कम मिलने पर बेरोज़गारी भत्ता दिया जाना।

3) अपने गाँव या आस-पास के क्षेत्र में ही कार्य स्थल होना।

5. यह कथन पूर्णतः सत्य है क्योंकि :-

1) प्राथमिक क्षेत्रक को उत्पादन बढ़ाने व वितरण के लिए नई तकनीकों व परिवहन की आवश्यकता होती है।

2) विनिर्माण उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राथमिक क्षेत्रक से ही प्राप्त होता है।

3) प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रक की सहायता से ही सेवा क्षेत्रक में नए-नए रोज़गार के अवसर प्राप्त होते है। जैसे- भंडारण, बैंकिग, यातायात आदि।

4) तीनों क्षेत्रक परस्पर निर्भर हैं, किसी एक की भी अनुपस्थिति का अन्य दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

6. 1) क्षेत्रीय शिल्प उद्योग व सेवाओं को प्रोत्साहन देना।

2) पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देना।

3) अनावश्यक सरकारी नीतियों व नियमों में परिवर्तन।

4) मूलभूत सुविधाएँ, तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना।

5) आसान शर्तों पर ऋण या आर्थिक सहायता प्रदान करना।

7. 1) रोज़गार के अवसर, जनसंख्या के अनुपात में नहीं बढ़ते।

2) कृषि व शहरी क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोजगारी बढ़ जाती है।

3) संसाधनों पर बोझ बढ़ जाता है।

4) अधिक व्यक्ति उपलब्ध होने से रोज़गार से प्राप्त आय निम्न स्तर पर आ जाती है।

5) वस्तुओं व सेवाओं की कीमत बढ़ जाती है और उपलब्धता कम हो जाती है।

8. 1) काम के निश्चित घंटे होगें।

2) निश्चित समय से अधिक काम करने पर अतिरिक्त आय प्राप्त होगी।

3) चिकित्सा सुविधाएँ व पेंशन सुविधा मिलेगी।

4) सवेतन अवकाश, भविष्य निधि का सेवानुदान मिलेगा।

5) कार्य स्थल पर उचित वातावरण व न्यूनतम सुविधाएँ प्राप्त होगी।

6) अनुचित शोषण नहीं होगा।

9. 1) इसमें ढाँचागत सुविधाओं, कृषि व उद्योगों को बढ़ावा दिया जाता है।

2) लोगों को सुविधाएँ न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध करवाई जाती हैं।

3) आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन व विक्रय में सरकारी सहायता व अनुदान दिया जाता है।

4) अधिकतम् सामाजिक कल्याण का उद्देश्य रखकर योजनाएँ बनाई जाती हैं।

5) श्रमिकों को अच्छी कार्य सुविधाएँ, वेतन आदि प्रदान किया जाता है।

10. जब लोग प्रत्यक्ष रूप से कार्यरत होते हैं परन्तु वास्तव में बेरोज़गार होते हैं अर्थात् एक ही काम में जरूरत से ज्यादा लोग लगे होते हैं, उसे प्रचछन्न बेरोज़गारी कहते हैं उदाहरण- ग्रामीण क्षेत्र में चार व्यक्तियों की आवश्यकता वाले खेत में परिवार के अधिक व्यक्ति लगे हुए हैं। शहरी क्षेत्र में किसी दुकान पर 2 की आवश्यकता के स्थान पर तीन व्यक्ति कार्य कर रहें हों। शहरी क्षेत्र में एक व्यक्ति के पास कपड़े की एक छोटी सी दुकान है। उसमें एक व्यक्ति की जरूरत है परंतु दो लोग काम में लगे हुए हैं।